



श्री आत्मानंद जैन अथवाणा नं ४२

श्री निमलाचार्यनिरचित—

श्री संवेगद्वामकन्दली.

( मूल सहीत भाषांतर )



प्रसिद्ध कर्ता—

श्री जैन आत्मानंद सभा—भावनगर



वार्. स २४६० आत्म स ३८ विक्रम स १९९०



किमत चार बोना



# ॥ वर्तमान ॥

ज्ञानामृत महोदधिकारी पैथन करा पूर्वाग्रह भद्रापात्र  
 औं भव्य प्रणाओनी सुक्ति माट बैराग्य-सुवेगमार्गनी प्रपन  
 चरतीयत उपदेशदाता जगद्वी हे मोह पामया माटे सरोग  
 मात्र नाही परम अने सुरय जीवष छे क जैना आदरणा  
 दरेक प्रणाओ अनादिकाळर्थी मोगवता दुखा दूर करी शक्त  
 हे तेज्ज्ञ ज नहि परतु विनामी सुगमार्थी अविनामी अना  
 अने असह मुरा पाम छे

आ शास्त्र गुहानी प्राप्ति माटे सुवेगगुण अदुरम साध  
 हातापी आ प्रथनु गार्भेक ' सुवेगम् कदली ' नाम प्रथ  
 कला महाएवे आपेत हे जैनेत्र प्रथोमो गीता बैराग्यशत्रव  
 दग्धे प्रथा हे जैनी रचना झारे तेना शब्दको शात अने सुर  
 घने हे तेम रामार्था आधि, व्याधि, अने उपाधियो शब्दी  
 शब्दी रेहेल आत्माभाने अपूर्व शांति कम प्राप्त थाय ' तेम  
 तेवा आत्माओनु परम धेय केम थाय ते हेतु व्यानमो राम  
 धीमान् विमलाचार्यं महाएवे आ प्रथनी एका शोषम  
 (सस्तन भाषामो) सुदर अने अलौकिक आ रचना करी हे





मनने क्यजे राखवा माटे तेम श्रीआनंदधनजा महाएरो  
धी चुयुनाथ भगवानना स्तवनमा जे जणावेल छे, ते मनने  
आ प्रथवत्ता। महात्माए मदोभत हाथी जणावी तेने वेद-वरने  
करवा सबेगमणी कोटडीया पुरवा माटे आ पचाश श्वोऽप्रमाण  
हु आ प्रथ रख दु तेम शसुआतमा जणावेल छे

प्रथनी शीली ते भाषाना अभ्यासको माटे मुदर, पथ  
रचना सरल अने विद्वनापूर्ण छ जे मनुष्य आ प्रथ मनन  
पूर्वक वाचे, विचारे-मनन करे, सोभले तेनु हृदय शात थता  
सबेगमार्गनो आदर करवा ते तरतु प्रयत्नवान बने छे जेथी  
चाल्नीवा तेनो विशेष लाभ रह शके ते माटे प्रात स्मरणीय  
हृपालु श्रीहसविजयजी महाराजना दशन निमित्त आ सभाना  
सेकेहरीनु गइ रामा पाटण जबु थता सेमने तेझोथ्रीए आ सभा  
तरफथी आ प्रन्य भूल तथा भाषातर साधे प्रसिद्ध करवा  
आशा करी, जेवी आजे आ प्रथ प्रसिद्ध याय छु  
केउलाक अनिवार्य वापणोने लीधे मुनिराजथ्री हसविजयजी  
महाराजनो हैयातिमा आ प्रथ प्रकट करी शम्या नथी ते माटे  
थमो दिल्लीर छाए आदो अच्यात्म-सबेगनो आ अपूर्व प्रथ  
दरेक पर लाइट्रीमा अने दरेक मनुष्य पासे निरतर अभ्या  
गमा होवो जोइए, तेटलुज नहिं परतु जेनशाळाओभा बाल्क  
बालिकाओने मूळ श्वोको बठाप्र बरावी तेनु अपूर्व रहस्य  
समनावयु जोइए

थीमान् हसविजयजी महाराज इच्छता—जणावता हता।

के आ प्रथ दरेक देनांती दरेक भाषामा प्रकट थंग  
जाइ अमोने आ दूरीवत याम्य जगाइ हे तेथी आ  
सभाने आधिक सहाय मद्दोने हिंदा अने दृश्योरा भाषामा  
तेना अवतरणो परावो बहोळो प्रचार करवाना अभिगाया हे

आ प्रथमा वरपासी मैयझीमार्द झेयरच्चदे आपेल भर्पिस  
मद्द भार आभार मानवामा आवे हे

आ सभाना मानवता पेटून साठेव बाबु गाहेव यहांदूर  
सिंहजी सिंधी साहेयनी सूचनातुगार आ प्रमाणे हवे पढा  
लाइ भेघरेने अपाना भेटना पुन्हाको राये दरेक बखते एक  
प्रथ शाश्वी भाषामा सब काह लाम लाह नावे ते माते प्रकट थगे

स्वगवासी महान्मा हस्तविजयनी महाराज तथा तेओधाना  
गुणित्र पन्यास्तजी थी स्वपत्तविजयजी महाराजनी आ  
सभा अर पूर्ण कृपाने लाइ आ गुम्भा तेओथीनी आभारा हे

थोमिद्दोग्र पत्तीताणा

वीर सुवर् २४६०

आमसुवर् १८  
विक्रम सुवर् १११०  
अक्षय तृनीशा

} गार्धी यहमेदास प्रिभुवनदास



કૃપામી મેધળભાઈ જ્યેન્થ દ પાલીતાણુવાળા  
બાળ ન ગરૂ



श्रीविमलाचार्यविरचित-

संवेगद्रुमकन्दली.

( गुर्जर भाषांतर. )

## मगलाचरण

---

द्वीभूतमनाचिभिः प्रविदलन्मोहान्धकारोटयै-  
न्मामावरानिरेशितेक्षणयुगैर्यद्वीक्ष्यते योगिभिः ।  
तत्पारे परतेजमा च तममा प्राप्तप्रतिष्ठ पर-  
दुर्लक्ष्य परमात्मसज्जममल उयोतिर्नपत्यक्षयम् ॥१॥

जेमणे ससारनी पीटाओ दूर करी हे अने मोह-  
रूपी अधकारता उद्यनो नाश कर्यो हे एना योगीपु-  
रुषो पोतानी नासिकाना अपभाग उपर घने नेत्रो राखी  
जेनु निरीक्षण परे हे अने जे परम तेन तथा  
अपकारनी पार प्रतिष्ठा पामी रहेले हे एवु  
दुर्लक्ष्य परमात्मारूप निर्मल अने अक्षय ज्योति  
पामे हे ॥ १ ॥

## अथ प्रयोजन.

—○—

रागद्वेषमदाभिमानमदनक्रोधादिभिरेति-  
व्याप्तं सर्वमिद चराचरभिति प्रायो जगत्तित्वरे ।  
इत्यन्तःकरणप्रमत्तकरिणः मोहुष्ठमुच्छन्दतो  
घर्माराममसौ नियन्त्रणकुटी पञ्चाशदारभ्यते ॥ २ ॥

प्रायेकरीने राग, द्वेष, मद, अभिमान, काम अनेकोध विगेरे विजयी हैरीओर्थी आ सर्व चराचर जगत् ज्याप्त थयेलु छे, तेथी अत करणरूपी मदोन्मत्त हाथी घर्मरूपी उद्याननो महान् ऊँठेद करवाने प्रवत्यो छे ते हाथीने कबजे रासवाने माटे आ पचाश श्वेकरूपी मजबूत कोटीनो आरभ करवामा आये छे<sup>१</sup> ॥ २ ॥

१ जेम कोइ ऊन्मत्त हाथीने कबजे बरी मनवृत मोटी कोटीमा पूरवामा आवे छे तेम आ पचाश श्वेकराळो प्रय जे दांच भयया सामछे तो तेनु उमत्त हृदय शाति यह जाय छे-मन हवजामो आवी जाय छे

प्राप्त घयेली शुद्ध सामग्रीने निष्कल करनारा  
 हृदयने उपात्तभूर्वक धर्मनो आदर  
 करवानो उपदेश

चेत फिन्न युथाल नाल गुप्ति ले यदा भवेऽस्मिन् रति  
 सामग्रीं निष्कली करो पि मुचिराङ्गन्ना निशुद्धामिमाम्।  
 क्षान्ति मार्दनमार्जय च युचिता मुक्ति तपः सत्यम्  
 सत्य निर्धनतामैषु नमिम धर्मं बुद्ध्यादरात् ॥३॥

हे चित्त ! यृथा आळ नाड्यो गुथाएला आ  
 ससारमा प्रीति नाथीने लावै काले प्राप्त घयेली शुद्ध  
 सामग्रीने तु यामाटे निष्कल घरे हे ? क्षमा, फोम-  
 छता, सरङ्गता, पवित्रता, मुक्ति, तपस्या, सत्यम्, सत्य,  
 अपरिप्रह औ प्रदाचर्येन्द्रप दश प्रकार धर्मनु तु  
 सेवन कर ॥ ३ ॥

## १ प्रथम क्षमाधी क्रोधने जीतवानो उपदेश

येनान्धीकृतमानसो न मनुते प्रायः कुलीनोऽपि सन्  
कृत्याकृत्यनिवेकमेत्यधमवष्टोके परित्याज्यताम् ।  
धर्मे तो गणवत्यतिप्रियमपि द्वेषि स्वयं सिद्धते  
स क्षान्तिक्षुरिकाधरेण हृदय क्रोधो पिजेयस्त्वया ॥४॥

हे हृदय ! जे माणसनु मन क्रोधधी अध यड जाय  
छे ते माणस कुलगान् होय तो पण कृत्य अने अकृ-  
त्यनो विवेक जाणी जातो नथी, ते नीच माणमनी  
जैम लोकमा त्याग करवा योग्य थइ जाय छे, ते धर्मने  
गणतो नथी, ते पोताना प्रियजननो पण द्वेष करे छे  
अने पोते पण ऐद पामे छे, तेवा नठारा क्रोधने तारे  
क्षमान्वी छरीने धारण करी जीती लेबो जोइए ॥४॥

म्रो घने शामाटे स्थान आपवु जोडण ?

आत्मान परितापयत्यनुकूल जन्मान्तरेष्वप्यल  
 दत्ते नैरपरपरा परिजनस्योद्देशमापादयेत् ।  
 धत्ते मद्भृतिमागरोधनविधौ गन्धेद्विपत्त्वं तत  
 क्रोधस्येत्थमरे ! रिषो दणमपि स्थानु रथ दीयते॑॥५॥

अरे हृदय ! जे ब्रोधस्सी शानु क्षणे क्षणे आत्मां  
 परिताप करे हे, जे जन्मातरमा पण परपरण पूर्ण वै  
 करावे हे, जे परिजन-परिवारन उद्देश करावे हे अ  
 जे सद्गतिना मार्गिनो निरोध करवामा तो मदोन्म  
 हायीना जेवो घने हे तेवा ब्रोधस्सी शानुने तु शाम  
 अणवार पण स्थान आये छ ? ॥ ५ ॥

\* शानुपण । \* मत्तगतत्व ।

## क्षमार्थी क्रोधरूपी शत्रुने बलात्कारे विलग्नो ज करी नाखवो जोइए

एव्यद्गुर्गति पातभीत इव य कृत्वा स्वय कम्पते  
यद्धीतैरिम मासगोणितरसैः कायः परित्यज्यते ।  
खानिर्दुःखगणस्य निर्मलगुणम्लान्येनहेतुर्मन  
क्षान्त्या हन्त विलक्षता निजस्त्रियो हठान्नीयतामृदि ।

हे मन ! जे न्रोधने लइने माणम भविष्यमा  
यगानी दुर्गतिमा पडवार्थी व्हीतो होय तेम कपी उठे  
छे, जेना भयथी जाणे व्हीता होय तेम मास तथा  
रुधिरना रमो शरीरने छोटी दे छे, जे दुखना समू-  
हनी राणरूप ठे अने जे निर्मल गुणोने ग्लानि आप-  
यामा मुख्य कारणरूप छे, तेवा तारा क्रोधरूपी शत्रुने  
तु क्षमा गुणर्थी नलात्कारे विलग्नो ननावी दे ॥ ६ ॥

---

१ क्रोधी माणस क्रोधना बावश्वारी ध्रूजे छे तेना शरीरमा मास  
तथा रुधिर रोपाइ जाय छे ते दुख पाम छे अने तेना चारा  
गुणो ढकाइ जाय छे, तेवो भावार्थ आ शोकमां उपजावेले छे ।

२ मार्दव-कोमलताना शुण विषे,

मानने छोड़ी कोमलता मेलवना अभ्यास करवो  
जोइए

आम्यत्यूर्ध्मुर अमो नमयितु पूज्येऽपि नो कन्धरा-  
मन्त धिसकुशीलतानगतनु प्राणी यदध्यासित<sup>१</sup> ।  
त मान विपदा निधानमयशोराग्रेनिदान मढा  
मुख्या मार्दवमादरेण महता पेत । नमम्यसताम् ॥७॥

हे चित्त ! जो मानना अध्यासर्थी माणमनु शरीर  
अत करणमा खोसेली कुर्मीलता—होडानी फोशर्थी  
जबाडाइ जाय हे, तेर्ही ते माणस पोतानु सुग उचु  
रार्थी बाले हे अने पूज्यपुरुषनी नरक पोतानी प्रीवा  
नमावधाने पण भमय बनो नर्ही, तेवा विषत्तिओना  
भट्टाररूप जने अपमीर्तिग वारणरूप मानने छोडी  
दद मोरा आरवड तारे मार्दव-कोमलता मेलवधा  
माटे ज अभ्यास करवो ॥ ७ ॥

१ कुर्मी(रोग)एव ए अवधा कुशीएता दुर्मीलता ।

२ अन्तररेखमारे रहर दुर्गाना गम्हे दुर्गारन एवा पण  
अथ यद शके

### ३ सरलताना गुण विषेः

मायाने दूर करवा सरलतानो अभ्यास करवो जोइए.

विश्वस्तानपि वञ्चयत्यनुदिन मित्रे गुरौ चन्द्रुपु  
 प्रायेण च्छलमीक्षते क्षणमपि द्रोह विना दुःस्थितः ।  
 जागति स्वपिति प्रतारणधिया या सेवयन्निख्लपो  
 मायाया. प्रतिकूलमार्जवमरे तस्याः समासेव्यताम् ॥८॥

हे चित्त ! जे मायाने सेवनारो पुरुष निर्लज्ज  
 थइने प्रतिदिवस विश्वासी भाणसोने छेतरे छे, प्राये  
 करीने पोताना मित्र, गुर अने नघुओमा पण छळनी  
 हृष्टिए जुवे छे, क्षणवार पण द्रोह विना रही शक्तो  
 नयी अने हमेशा बीजाने छेतरवानी बुद्धि राखी जागे  
 छे अने सुवे छे अर्थात् जागता अने सुता पण बीजा-  
 ओने छेतरवाना ज विचारो कर्या करे छे, तेवी मायाने  
 प्रतिकूल एवी मरलता राखबी जोइए तेथी तु तेनु  
 सेवन कर ॥ ८ ॥

## लोभयी मुक्त रहेयु जोइए

रुप्यापह्निरिय नर्ब विधिनाप्येतेन निष्पाठिता—  
छेत्रु प्रकंमिता किमप्यतिवरा या केरल वद्देते ।  
तद्योमस्य विनृभित स सकलहेश्चप्रथतिस्तरो—  
मुक्तिर्मुक्तिरपूर्ममागमरिधौ दूती नमाराघ्यताम् ॥९॥

‘ऐ चित्त ! जे लोभ—रुप्याप्त्याए एव नरी जातनी  
वेळ विधिण उत्पन्न करेल छे, के जे वेलनो उच्छेद  
करवा जाता उठटी ते वधारे ने वधारे वपती जाय छे,  
ते लोभनु ज वधनु जतु स्वरूप हे, अने वरी जे लोभ  
सब जातना क्लेशोने उत्पन्न वरनागे छ, तेवा लोभ-  
मार्यी जे मुक्ति ( हुट्यु ) ते मुक्ति ( मोक्ष )रूपी  
वधूनो ममागम करावामा दूरीरूप ह, तेथी तु तेनु  
आराधन कर ॥ ९ ॥

## ४ शुचिता-पवित्रताना गुण विषे

बाह्य शौच नहीं करना अतःशौच करनु जोइए

तीर्थं तीर्थमरे परित्रभसि किं खेदाय दन्वा मनः ?  
 स्नानादाहमलोऽप्यपेति न पुनर्भीमानुरन्ध. क्षयम् ।  
 आत्मा चैष कलद्वितीयन्तरमलं शुद्धिं तत. कि भज्ञ-  
 शौचं तत्तदहो कुरुप्य कुर्ने तेषा पदुच्छेदनम् ॥१०॥

हे भग्न ! तू तारा हृष्णने गेत्तु आर्षा तार्पे तीर्थे  
 शामाटे भने हे ? तीर्थमा स्नान करवावी बाह्य मादनो  
 क्षय वशे पण भार-मर-अदरना मञ्जनो क्षय वशे  
 नहीं अदरना मलोर्धी कलमित बयेलो नारो आत्मा  
 दीरी रीते शुद्धिने पामडे ? तेर्थी जे गीते अतरना मञ्जो  
 उच्छेद पासे तेनु तु शौच वर ॥ १० ॥

## ६ तपना गुण विषे

दुखोना अगाध ममुद्भवे तारनारु तप  
करु जोइए

निम्तीर्णा चह्यस्तरन्ति यहो मध्यास्तरिष्यन्त्यपि  
श्वेशाभीष्मगाधमध्यातेरा चार्णोन येन ध्रुम् ।  
चाद्याभ्यन्तरभेदभिन्नमचिरात्तमारनारागृह-  
कूरद्वारकपाटभेदि तदरे स्फीत तपलप्यताम् ॥११॥

## ६ संयमना गुण विषे

मोक्षपुरीने मार्गे जना माटे सयमरुपी कवच  
धारण करखुं जोडए

आत्मनिष्ठसि हन्त शाश्वतपुरीमार्गे विहर्तुं यदि  
आतः । सयमर्मणा कुरु तदा रक्षापिधि मर्तः ।  
नो चेदिन्द्रियतस्करैस्तत्र हठाचीक्षणाग्रभूरिस्फुर-  
चिन्ताभिलिङ्गतैनिमिद्य हृदय ग्राह्यो विवेको मणि. ॥१२॥

अरे भ्राता आत्मन् ! मोक्षपुरीने मार्गे विहार  
करनानी जो तारी इच्छा होय तो तु सयमरुपी कवच  
धारण करीने सर्व तरफथी तारी रक्षा करजे जो तु ते  
रक्षा नहीं करे तो इद्रियरुपी तस्करो तीक्ष्ण अग्र-  
याला फरकुता चितारुपी सेंकडो भालाओधी तारा  
हृदयने तोडी तेमा रहेला विवेकरुपी मणिने चलात्कारे  
महण करी लेशे ॥ १२ ॥

## ७ सत्यना गुण विषे

नठारा अमत्य वचनने छोड़ी प्रतिनाथी मत्य  
बोलतु जोड़ए

पुण्याना प्रवटप्ररामपटह प्रस्थानमन्मङ्गल  
माहात्म्यम्य यटन मन्त्र इव चत्कीर्ते समुचाटने।  
आत्मापि स्वयमेव लडत इव प्रायो यदुषारणे  
तन्मुञ्चानुतमादत बुझ मरेण! संत्येन मत्य सुरे ॥१३॥

हे मर्गे ! जे ऐमत्य वचन पुण्योनो प्रगट रीते  
प्रवास करायदासा पटह ( ढोल ) रूप हे, जे महा  
त्मापणाने प्रवाण करवानु उत्तम भगवरूप ह, जे  
कीर्तिने उथाटन करवाना मत्ररूप हे, अने जेनो उथार  
करथामा प्रायेकनी आत्मा पोते पण “रमानो होय तेम  
छाँगे हे, तेवा अमत्य वचाने छोड़ी दे अने प्रतिज्ञाथी  
गुरुमा सत्य वचननु आन्मूर्खक प्रहण कर ॥ १३ ॥

---

१ प्रतिज्ञा २ एङ्ग एव वरा वल्लभी पुण्य चाहनु  
जाय ह अन माहात्म्य भरी उद्द छ

## ८ अपरिग्रहना गुण विषे

सर्वत्र समदृष्टि थड निर्दिक्चन थवु जोहए.

कः कस्येह न को न कस्य किमिह स्वस्याथ कि चापर-  
स्येत्थ चित्त । भवस्वरूपमसिल सञ्चिन्त्य मायामयम् ।  
स्वर्ण लेणुमथो प्रिय रिपुमथो वेशमान्यरण्यान्यथो  
स्मैणानीह तुणान्यथो समदृशा पश्यन् भवाकिञ्चनः ॥१४॥

हे चेतन । ‘कोनु कोण छे ?’ कोड ‘कोइनु  
नथी’ अने ‘आपणु तु छे अने बीजानु शु छे ?’ एवी  
रीते आ वधु मायामय ससारनु स्वरूप चितवी स्वर्ण  
अने भाटीनु ढेकु, प्रियमित्रो अने शत्रुओ, घरो अने  
चगलो, खोओ अने तुण ए सर्व समदृष्टिथी जोइ तु  
निर्दिक्चन-परिभ्रह वगरलो था ॥ १४ ॥

## ९ ब्रह्मचर्यना शुण रिषे

आ ससाररूपी लताने छेदनारा निर्मल ब्रह्मचर्यने  
सेवयु जोहए

यन्मुक्त मिल चहुपेन रहित प्राणी न पिप्राजते  
सर्वाङ्गि सुमगोडपि हि प्रतविधेर्धर्मस्य यज्ञीनितम् ।  
धीराणामपि देवदानशनृणा यत्मव्यया दुष्कर  
वत्ससारेलतालपिममल रे नमचर्यं भज ॥ १५ ॥

हे चेतन ! ब्रह्मचर्यर्थी रहित एओ युद्ध सर्व अरो  
मुद्र एवो प्राणी जेम नेत्र बगरनो शोभे नठी तेम  
शोभलो नथी जे ब्रह्मचर्य प्रतविधिना धर्मनु जीवनरूप  
हे, अने जे ब्रह्मचर्य धीर एगा पग देव, दानव अने  
मनुष्योने सर्वया दुष्कर हे, तेवा ससाररूपी लताने  
छेदनारा निर्मल ब्रह्मचर्यनु तु सेवन थर ॥ १५ ॥

## १० देहनी अनित्यता विषे

आ देह कदि पण परलोकमा साये  
आववानो नथी.

इशु आम्यामि यामि पारमुदधेदन्य ममालम्बसे  
आवामिच्छामि गच्छसि प्रतिगृह नद्वाज्ञलियांचसे ।  
कॅ किं नास्य कृते करोपि वपुषो रे जीव ! लोकान्तर-  
स्थाने तु पदान्तरेऽपि भवता मादृंन तद्यास्यति ॥१६॥

हे जीव ! आ शरीरने अर्थे तु शु शु नथी करतो ?  
तु तेने माटे दिग्गाओमा भटके छे, समुद्र पार जाय  
छे, दीनता करे छे, सेवा ( नोकरी ) करवानी इच्छा  
राखे छे, घेर घेर भटके छे अने ने हाथ जोडीने  
मागे छे, पण ज्यारे तु परलोकमा प्रयाण करीश त्यारे  
ते शरीर तारी साथे एक पगलु पण आववानु  
नथी ॥ १६ ॥

## २१ कर्मनी शक्ति विषे

पोताना कर्मनी जघड बघाएलो जीव सबेग  
रुपी उच्चा शुक्र उपर चढ़ी शक्तो नवी

लोकम्य शृणुम् प्रतिक्षणमिशा समारनि मारत  
नि मन्देदमयात्मनाप्यहरह प्रत्यक्षमीशामहे ।  
किन्तु मन्त्रितान्तसौर्यफलद सबेगहुङ्कुमे  
नारोदुधमसे हृद निर्गंडितो जीव स्वर्क कर्मभि ॥१७॥

‘आ समार ति सार हे’ एव अमे धारयार  
लोको पासे री सामळीण छोए अने ‘ते नि सदेह हे’  
एवु अमे अमारी जाते हमेदा प्रत्यक्षपणे जोइर  
छीण, ते छता पोताना कर्मनी जघड बघाएलो जीव  
एकातपणे मोक्षमुखना फलने आपनारा सबेगरुपी  
उच्चा शुक्र उपर चढ़ी शक्तो नवी ॥ १७ ॥

१२ कामासक्ति त्याग करवा विषे.

सिंपाकना फलनी जेम विरम एवा कामने विषे  
आमक्ति छोडी देवी जोड्हए

रे रे मानम ! निन्दितेषु निरुद्धः कामेषु घट्टाग्रहं  
कि किप्पाकफलेष्मिन्तविरसेष्वेतेषु धन्त्से रतिम् ?।  
सहृत्याशु यहिर्भ्रम कुरु मिमप्यालोच्य तन्नो पुन-  
र्यनास्मिन् जगति प्रकामकदुभिं कष्टेषु पद्मयसे ॥१८॥

अरे मन ! विद्वानोऽ निदेला अने किपाकना होरी  
बृक्षनी जेम परिणामे विरम एवा काम-विषयोमा  
आग्रह वाधीने तु शामाटे प्रीति थरे हे ? अने घहा-  
रनो भ्रम सत्वर छोडी दह काइ पण विचारीने काम  
कर के जेथी आ जगतमा अति घडवा एवा फटोथी  
तने उपद्रव थाय नहीं ॥ १८ ॥

## १३ शारीरना मोह विषे

आ स्यार्थी शरीरना कामने भाटे सकल्प-विकल्पो  
करी आत्माने सेद आपबो न जोइए

हहो मानम ! कथ्यता मम पुर पूर्णामि सप्रथय  
रे निर्लङ्घण ! शिक्षिता कुत इय नि सीमनिर्लङ्घताै !  
अस्य म्यार्थपरायणस्य चपुष कृत्येषु मृदादरा  
दात्माय सहजोऽपि निर्देय ! यत खेन  
मद्भृत्यते ॥ १९ ॥

हे लभण रहित मन ! हु तने नम्रता साथे पूर्ण  
छु के आवी वेहद निर्लङ्घता हु क्याथी झीरयु १ हे  
मने कहे हे मूढ 'हे निर्देय' ॥ जे स्यार्थमा तत्पर एव  
शरीरना कार्यमा आदर रारपी तु तारा सहज आत्माने  
सकल्प-विकल्पोधी वेद पमाडे छे ॥ १९ ॥

## १४ विषयोना कडुकल विषे

विषयोमा सुखनु अभिमान न राख्यु जोहए.

मूयो भूयोऽपि रे रे गतभय ! भगता आन्धता भीभीभी  
सारेऽस्मिन् विषोढा. कति कथय महावेदनाः कर्मदोषात् ?  
आनानोऽप्येतदेव प्रतिदिवममहो तश्चिदानेषु कस्मा-  
त्तमनेकान्तमूढ. कलयसि विषयेष्वेव सौरयाभिमानम् २०

हे निर्भय आत्मन् ! वर्मना दोषथी आ अति-  
भयकर ससारमा घारवार भमीने तें खेटली महावेदनाओ  
सहन करी ? ते कहे ए मोटी वेदनाओनु कारण  
विषयो छे ए वात तारा जाणवामा छे, छता तु अति-  
मूढ थइने हमेशा ते विषयोमा सुखनु अभिमान शामाटे  
राखे छे ? || २० ||

जो चित्तने विषयोमार्थी अटकाववामा  
आवे तो सर्वं मुग्र हावमा जे

प्रभ्यम्तं रिमु पुम्तकं रिमथना चेष्टाभिरेकान्तव  
कष्टाभि रिमु दवतादिविष्यं पूजाप्रणामादिभि  
चेतथेदिदमर्थं तूलतरल शक्येत रोदु चलात  
कामेभ्य वरपङ्कजे ननु तदा मौरयानि भर्णिष्यपि ।

हे भव्य ! तारे घणा पुस्तरोनो अन्याम वरवाः  
फाइ जहर नधी, एकातपणे कष्टभरेटी तपस्या  
बेष्टाओ वरयानी पण लस्तर नधी अन दवता यग्नेरे  
पूजा तथा प्रणामादि वरवानी पण जहर नधी लो आ  
दाना रना जेवा चचळ चित्तने विषयोमार्थी बलात्क  
अटकाववानी लारामा शस्ति होय तो पर्ही सर्वं मुर  
वारा हावमा जे हे, एम ममजी हजे ॥ २१ ॥

